



ऋग्वेद मण्डल-10

ऋग्वेद मन्त्र 10.3.3

भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुशदिर्भवर्णैरभि राममस्थात् ॥

(भद्रः) कल्याण करने वाला, शुभ (भद्रया) कल्याण करने की शक्ति के साथ (सचमानः) निकटता से जोड़ता है (आगात्) आता है, प्राप्त होता है (स्व सारम्) अपना प्रेम, अपना रूप (जारः) कमजोर करता हुआ, तोड़ता हुआ (अभ्येति) दौड़ता है (पश्चात्) पीछे (सु प्रकेतिः) उत्तम चेतना के साथ (द्युभिः) प्रकाशवान् किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की) (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (वितिष्ठम्) विशेष रूप से स्थापित, आस-पास विद्यमान (उशद्भिः) सुन्दर चमक के साथ (अर्णैः) रंग, रूप (अभि – अस्थात् से पूर्व लगाकर) (रामम्) अन्धकार को (अस्थात् – अभि अस्थात्) दबाता है, दूर रखता है।

व्याख्या :-

अन्धकार और अज्ञानता को कौन दबाता है?

इस मन्त्र का देवता 'अग्नि' है।

वैज्ञानिक अर्थ :- कल्याण करने वाला शुभ (सूर्य) अपनी कल्याण करने की शक्तियों (ऊषा) के साथ आता है और अपने प्रेम तथा अपने रूप के साथ निकटता से जुड़ने के लिए प्राप्त होता है जो अन्धकार और अज्ञान को कमजोर कर देता है और तोड़ देता है। इस प्रकार उत्तम चेतना के साथ और प्रकाशवान् किरणों के साथ वह अपनी शक्तियों के पीछे दौड़ता है। वह 'अग्नि', ताप और प्रकाश (सूर्य का) विशेष रूप से स्थापित होता है और चारों तरफ सुन्दर चमक और रंगों के साथ विद्यमान रहता है। इस प्रकार, वह (सूर्य) अन्धकार को दबा देता है और दूर कर देता है।

आध्यात्मिक अर्थ :- एक शुभ दिव्य व्यक्ति अपनी दिव्य शक्तियों के साथ अपने प्रेम अर्थात् ज्ञान और अपने रूप अर्थात् परमात्मा की अनुभूति के निकट आता है जो अज्ञानता के अन्धकार को कमजोर कर देता है और तोड़ देता है। इस प्रकार वह अपनी श्रेष्ठताओं और दिव्यताओं के पीछे भागता है। वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सुन्दर चमक और रंगों के साथ, उसके जीवन में, स्थापित होते हैं और विद्यमान रहते हैं। इस प्रकार वह अज्ञानता और बुराईयों के अन्धकार को दबाता है और दूर रखता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें अपनी ऊर्जा का प्रयोग कहाँ करना चाहिए?

ज्ञान की क्या भूमिका है?

'राम' शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ क्या हैं?

जब हम 'अग्नि' का आह्वान करते हैं तो यह हमारे पास ऊर्जा के रूप में आती है। यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि ज्ञान से प्रकाशवान् होने के लिए तथा अज्ञानता के अन्धकार को दबाने के लिए और दूर रखने के लिए उस ऊर्जा का सदुपयोग करें। ज्ञान अत्यन्त सकारात्मक मार्ग है जिसके साथ स्वाभाविक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



रूप से महान् दिव्य लक्षण जुड़ जाते हैं, विशेष रूप से अन्य लोगों का कल्याण करने की भावना। श्रेष्ठताओं से जीवन में दिव्यताएँ आती हैं। फिर दोनों, श्रेष्ठताएँ और दिव्यताएँ हमें परमात्मा के साथ एकता के सत्य की अनुभूति प्राप्त करने के मार्ग पर प्रगति करने में सहायता करती है।

यह सत्य है कि वेद धरती पर प्रथम ज्ञान है। अतः वेदों में कोई इतिहास नहीं है। 'रामम्' शब्द इस मन्त्र में अन्धकार और अज्ञानता के लिए प्रयोग होता है जिसके साथ उसे दबाने की प्रेरणा शामिल है, क्योंकि इस मन्त्र का देवता 'अग्नि' है जो अन्धकार और अज्ञानता को दूर करने की शक्ति रखता है।

'राम' शब्द के अनेक अर्थ हैं जिसमें अयोध्या के राजा दशरथ जी के सुपुत्र और महान् अवतार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भी शामिल हैं।

1. भारतीय इतिहास में 'राम', अयोध्या के राजा हैं जो राक्षसी शक्तियों को दबाने और साधु-सन्तों से उनको दूर रखने के लिए जाने जाते हैं।
2. यदि 'राम' को स्वर और व्यंजन में पृथक् किया जाये अर्थात् र, आ, म – 'र' का अर्थ है रसातल अर्थात् निम्न लोक। 'आ' का अर्थ है आकाश, ब्रह्माण्ड का आकाश तत्त्व अर्थात् उच्च लोक, 'म' का अर्थ है मृत्यु लोक अर्थात् मृत्यु। इन सब लोकों का स्वामी 'राम' अर्थात् परमात्मा है।
3. 'रमन्ते सर्वत्र इति रामा' – जो सर्वत्र व्याप्त है और विद्यमान है वह 'राम' अर्थात् परमात्मा है।
4. 'नमन्ते योगिनः अस्मिन् सा रामम् उच्यते' – सभी योगी, सन्त और साधु 'राम' शब्द का उच्चारण करते हैं, उसमें स्थापित हो जाते हैं और उसके मंगल आनन्द और उसकी शान्ति में डूब जाते हैं।
5. 'राम' का अर्थ अन्धकार या काला रंग भी है।
6. 'राम' का अर्थ अपने सम्बन्धों को संतुष्ट रखने वाला या प्रेम करने वाला प्रेमी है।
7. 'राम' संस्कृत के मूल धातु 'रम' से बना है जिसका अर्थ है जीना, आनन्दित रहना या स्थापित रहना, इसके साथ हम 'धम' प्रत्य लगाकर 'राम' बना है। 'धम' का अर्थ है सृष्टि का, अन्तरिक्ष का। इसलिए 'राम' का अर्थ हुआ अन्तरिक्ष में स्थापित अर्थात् ब्रह्माण्ड पुरुष।
8. 'राम' के केवल पुलिंग अर्थ ही नहीं है, अपितु इसका स्त्रीलिंग भी अर्थ है। राम का अर्थ पत्नी भी होता है।
9. दक्षिण भारतीय परम्परा में, 'रमन्ना' का अर्थ भी राम ही होता है।
10. जब भगवान हनुमान जी ने श्रीलंका जाने के लिए समुद्र पार करने से पूर्व भगवान श्री रामचन्द्र जी से 'जयश्रीराम' का उच्चारण करते हुए आशीर्वाद की प्रार्थना की तो भगवान राम ने हनुमान जी से पूछा – 'आप इस नाम के उच्चारण के साथ किस प्रकार इस समुद्र को पार कर सकते हो जिसे मैं स्वयं भी नहीं कर सकता।' हनुमान जी ने 'राम' के तीन आयाम स्पष्ट करते हुए उत्तर दिया – (क) आत्म बुद्धि से अर्थात् आध्यात्मिक पक्ष के अनुसार – 'मैं आपमें हूँ और आप मुझमें हो', (ख) जीव बुद्धि से अर्थात् अधिदैविक या दिव्य दृष्टिकोण से – 'मैं आपका अंग हूँ', (ग) देह बुद्धि से अर्थात् अधिभौतिक या सांसारिक दृष्टि से – 'मैं आपका सेवक हूँ और आप मेरे स्वामी हो।' इसके बाद भगवान राम ने हनुमान जी से पूछा, 'भगवान के तो कई नाम हैं, आप मेरे नाम 'राम' का ही उच्चारण क्यों करते हो, 'नारायण' आदि का क्यों नहीं?' हनुमान जी ने उत्तर दिया, 'बेशक भगवान के कई नाम हैं, किन्तु लगातार उच्चारण के लिए केवल एक ही नाम को धारण करना चाहिए जो मैंने कर लिया है।
11. कबीरदास जी ने 'राम' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है – एक 'राम' दशरथ का बेटा (शरीर रूप अर्थात् अधिभौतिक),

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



एक 'राम' घट-घट में लेटा (प्रत्येक शरीर में जीव अर्थात् अधि दैविक),
 एक 'राम' का सकल पसारा (सर्वविद्यमान, सत्, चित्त और आनन्द – अधि दैविक),
 एक 'राम' सब जग से न्यारा (अव्यक्त अर्थात् आध्यात्मिक)।

Rig Veda Mandal 10 sukta 9

On Water

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.1

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
 महेरणाय चक्षसे॥

(आपः) जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ (हिष्ठाः) निश्चित रूप से हैं (मयोभुवः) शान्ति, कल्याण और आनन्द को उत्पन्न करने और देने वाले (ताः) वे (नः) हमें (ऊर्जे) ऊर्जाओं में (शरीर, मन और आत्मा की) (दधातन) हमें धारण करते हैं (महे) शक्तिशाली (रणाय) शक्ति, वैभव (चक्षसे) ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान, सभी इन्द्रियों का, अनुभूति की शक्ति।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 11.50 और 36.14 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में जल का क्या महत्त्व है?

जल जो ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ हैं, निश्चित रूप से शान्ति, कल्याण और आनन्द को उत्पन्न करने वाली और देने वाली हैं। वे हमें ऊर्जाओं में स्थापित करती हैं (शरीर, मन और आत्मा की) जो ब्रह्म के सम्पूर्ण ज्ञान, सभी इन्द्रियों के सम्पूर्ण ज्ञान और अनुभूति की शक्ति से सम्बन्धित शक्तिशाली वैभव है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या जल चिकित्सा में सहायक होता है?

जल ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा किस प्रकार है?

जल हमारे संकल्पों को किस प्रकार बल प्रदान करता है और हमारी आध्यात्मिक प्रगति में सहायक होता है?

हमारी तीनों स्तरों पर ऊर्जाओं का मुख्य स्रोत और भौतिक तथा आध्यात्मिक पूर्ण विकास का स्रोत जल ही है।

हमारी शारीरिक और मानसिक समस्याओं का इलाज करने के लिए जल चिकित्सा कई प्रकार से की जाती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सामान्य तापमान वाले जल को पीना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। यह शरीर को जल से परिपूर्ण रखता है और विजातीय तत्वों को बाहर करता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सब्जियों आदि में विद्यमान जल तत्व पकाने की प्रक्रिया में कम न हो। अम्लीय जल हमारे शरीर को बुरी तरह से प्रभावित करते हैं।

हमें जल के अनेक चिकित्सा लक्षणों के प्रति चेतन होना चाहिए :- (1) पाचन क्रिया में सहायता करता है, (2) शरीर से मलों के निष्कासन में सहायता करता है, (3) ठंडक देकर प्यास बुझाता है, (4) तनाव मुक्त विश्राम देता है, (5) खाँसी आदि गले की समस्याओं का इलाज करता है, (6) उल्टी करने में सहायक होता है, (7) अग्नि को शान्त करने में सहायक होता है, (8) रक्त संचार में सहायता करता है, (9) ठंडक का प्रभाव पैदा करता है, (10) ऊर्जा को सक्रिय करता है, (11) वजन कम करने में सहायता करता है, (12) जीवाणुओं को मारकर शरीर को कमजोर होने से बचाता है, (13) तापमान को कम करने में सहायता करता है, (14) कठोरता या तनाव को मुलायम करता है, (15) दर्दों आदि को कम करता है, (16) मूत्र की मात्रा को बढ़ाता है, (17) पसीने के निर्माण में सहायता करता है, (18) बर्फीला ठंडा पानी शरीर को सुन्न करने में सहायता करता है, (19) शरीर का संतुलन बनाये रखने में सहायता करता है, (20) अच्छी निद्रा को प्रेरित करता है उदाहरण के लिए गर्म पानी से पैरों को धोने से अच्छी नींद आती है, (21) इसकी भाप श्वसन तन्त्र की समस्याओं को दूर करती है, (22) जोड़ों को गतिशील बनाने में सहायता करता है।

ब्रह्माण्ड की ऊर्जा सबसे अधिक शक्तिशाली है। ब्रह्माण्ड की ऊर्जा प्रत्येक कोशिका में और सबसे छोटे कण में भी विद्यमान है। क्योंकि धरती पर जल की मात्रा 70 प्रतिशत है, स्वाभाविक रूप से, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का वही अनुपात जल में भी विद्यमान है। इसलिए इसे ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा कहते हैं।

यदि हम जल के प्रति अपनी चेतना बढ़ा लें तो निश्चित रूप से हम अपने शरीर, अपने मन और आत्मा सबकी शक्तियों को बढ़ा सकते हैं।

जल की स्मृति होती है। इसलिए धार्मिक क्रियाओं में या एक नियमित दिनचर्या की तरह अपने संकल्पों और प्रार्थनाओं को जल के समक्ष समर्पित करना चाहिए। इसीलिए जल पर उपवास को आध्यात्मिक प्रगति के लिए लाभकारी माना जाता है, क्योंकि इससे हमारे संकल्प और प्रार्थनाएँ बलशाली होते हैं।

स्नान करते समय, जल पीते समय और अन्य लोगों को जल उपलब्ध कराते समय इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.2

Rigveda 10.9.2

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।

उशतीरिव मातरः।।

(यः) वह (वः) आपका (शिवतमः) आनन्ददायक, सबका कल्याण करने वाला (रसः) तरल, ऊर्जाओं का निचोड़ (तस्य) उसका (भाजयत) भाग (इह) यहाँ, इस जीवन में (नः) हमारे लिए (उशतीः) प्रेम करने वाला, आकर्षण (इव) जैसे कि (मातरः) माताएँ।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 11.51 तथा 36.15 में समान रूप से आया है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

जल की दिव्यता क्या है?

जल की तुलना माँ के दूध से क्यों की जाती है?

इस सूक्त के देवता 'आपः' अर्थात् जल से प्रार्थना की गई है।

आपके आनन्ददायक तरल अर्थात् जल, ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं का निचोड़, सबके लिए आनन्ददायक है और सबका कल्याण करता है। अतः अपनी तरल ऊर्जा को हमारे साथ यहाँ, इसी जीवन में, बांटें जिस प्रकार एक प्रेम करती हुई माँ अपनी तरल ऊर्जा अर्थात् छाती के दूध को अपने बच्चे के साथ बांटती है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें जल का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

जल की तुलना माँ के दूध से की गई है जो जन्म के बाद बच्चे को दी जाने वाली पहली ऊर्जा है। जल को भी ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं के निचोड़ का मुख्य तत्त्व समझना चाहिए। जल सभी जीवों के अच्छे स्वास्थ्य और रोगों के इलाज के लिए आनन्ददायक है। इसे दिव्यताओं का निचोड़ समझकर वैसे ही पीना चाहिए जैसे माँ के दूध को पिया जाता है, धीरे-धीरे एक-एक घूंट करके उसके साथ मुँह में पैदा होने वाली लार को मिलाकर। जल पीते समय हमें इसकी दिव्य शक्तियों के प्रति चेतन रहना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.3

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।

आपो जनयथा च नः ॥

(तस्मा) उसके लिए (ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा के लिए) (अरम् गमाम) हम बिना देरी के आते हैं, हम समुचित प्रयास करते हैं (वः) आपके (यस्य) जिसके लिए (क्षयाय) आवास या उत्पादन (जिन्वथ) हमें प्रेरित करो, हमें उत्तेजित करो (आपः) जल (जनयथा) हमें ताकत और जीवनी शक्ति प्रदान करो, उत्पादन करने का बल (च) और (नः) हमें।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 11.52 और 36.16 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हमें जल की आवश्यकता क्यों होती है?

आपकी ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाओं अर्थात् जल के लिए हम बिना देरी के आपके निकट आते हैं, हम समुचित प्रयास करते हैं, जिसके आवास या उत्पादन के लिए आप हमें प्रेरित करते हो और उत्तेजित करते हो। जल हमें ताकत, जीवनी शक्ति और उत्पादन का बल प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जल हमें उत्पादन का बल किस प्रकार प्रदान करते हैं?

सभी खाद्य पदार्थों के आवास और उत्पादन के लिए हमें जल की आवश्यकता होती है जैसे – अनाज, फल और सब्जियाँ आदि। क्योंकि सभी प्राणियों को ताकत और जीवनी शक्ति प्रदान करने के लिए हमें खाद्य पदार्थों को पैदा करने की प्रेरणा दी गई और उत्तेजित किया गया। जल हमारे अस्तित्व अर्थात् हमारे पालन-पोषण और शक्ति संग्रहण के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। बिना जल के कुछ भी पैदा नहीं किया जा सकता।

जल हमें पैदा करने का बल देता है। जैसे – जल अनउपजाऊ भूमि को भी खाद्य पदार्थ पैदा करने के योग्य बना देता है। 'जनयथा' शब्द बच्चे पैदा न होने के उपचार का संकेत करता है। जो लोग, पुरुष या स्त्री, बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं हैं उन्हें नियमित रूप से इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अधिक मात्रा में जल को औषधि की तरह पीना चाहिए।

यहाँ यह कहना असंगत नहीं होगा कि जीवों के अस्तित्व के लिए 5 तत्वों में से प्रत्येक तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह सूक्त जल के महत्व को उजागर करता है। क्योंकि इसका देवता अर्थात् दिव्य शक्ति 'आपः' अर्थात् जल है।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.4

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः॥

(शम्) शान्ति और कल्याण देने वाला (नः) हमें (देवीः) दिव्य, विजेता (अभिष्टये) आक्रमण के लिए (बुराईयों और रोगों पर) (आपः) जल (भवन्तु) हो (पीतये) संरक्षण के लिए (शम् योः) चिकित्सा और रोगों को दूर रखने के लिए (अभि स्रवन्तु) चारों तरफ बहता है (भीतर पीने के लिए और बाहर स्नान आदि के लिए) (नः) हमारे।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 36.12 में समान रूप से और सामवेद 33 में एक परिवर्तन के साथ आया है। सामवेद 33 में 'आपो' के स्थान पर 'शं नो' आया है, क्योंकि सामवेद 33 का देवता 'अग्नि' है 'आपः' नहीं।

व्याख्या :-

जल हमारे उत्तम स्वास्थ्य को कैसे सुनिश्चित करता है?

दिव्य विजेता जल हमारे लिए शान्तिदाता और कल्याण करने वाला है। यह हमारी बुराईयों और रोगों पर आक्रमण करता है। यह हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करता है। यह अन्दर से और बाहर से अर्थात् पीकर और बाहर स्नान आदि से हमारे रोगों का इलाज करता है और रोगों को दूर भी रखता है।

जीवन में सार्थकता :-

जल किस प्रकार भोजन भी है और औषधि भी है?

जल हमारे लिए भोजन भी है और औषधि भी है। प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में जल को पीना हमारे लिए भोजन तथा औषधि दोनों के रूप में कार्य करता है। व्रत के समय, जल केवल भोजन होता है। औषधि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



के रूप में जल हमारे शरीर से विजातीय तत्वों को निकालता है। जल से हम उच्च रक्तचाप, हानिकारक कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह, कब्ज, लीवर की सफाई और कीडनी की कमजोरियों का उपचार कर सकते हैं। सामान्य तापमान वाले जल से प्रतिदिन स्नान करना हमारी त्वचा को साफ और स्वस्थ बनाता है। पीने के लिए सामान्य तापमान वाला या गरम जल का ही प्रयोग करना चाहिए। जबकि स्नान के लिए सामान्य तापमान या भूमिगत जल का प्रयोग किया जाना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.5

इशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम् ।
अपो याचामि भेषजम् ॥

(इशाना) स्वतंत्रता सत्ता, सर्वोच्च स्वामी (वार्याणाम्) सभी इच्छित सम्पदा और स्वास्थ्य (क्षयन्तीः) आवास (चर्षणीनाम्) कर्मशील जीवों के लिए (अपः) जल (याचामि) मांगता हूँ (भेषजम्) औषधि।

व्याख्या :-

हम जल को या औषधि को क्यों मांगते हैं?

जलो! आप समस्त इच्छित सम्पदा और स्वास्थ्य की सर्वोच्च सत्ता हो और सर्वोच्च स्वामी हो। आप सभी कर्मशील जीवों के लिए आवास हो। मैं औषधि की तरह आपकी (जल की) याचना करता हूँ।

जीवन में सार्थकता :-

ब्रह्माण्ड में जल की क्या भूमिका है?

धरती के भीतर जल है। बादलों का निर्माण जल से होता है। जल के बिना धरती कुछ भी पैदा नहीं कर सकती। ब्रह्माण्ड की इस तरल ऊर्जा के बिना मनुष्य न तो कोई सम्पदा पैदा कर सकता है और न ही स्वस्थ रह सकता है।

ब्रह्माण्ड में विद्यमान जल, लगभग 70 प्रतिशत, ही सृष्टि को ऊर्जावान बनाता है। इसी प्रकार जल, हमारे शरीर में भी लगभग 70 प्रतिशत है, इसे जल और ऑक्सीजन से परिपूर्ण रखता है और इस प्रकार इसे स्वस्थ और कार्य करने के योग्य बनाता है। सभी जीवों की यही दशा है। किसी भी जीव और किसी भी वनस्पति का जल के बिना अस्तित्व सम्भव नहीं है। इसलिए हमें सब जीवों के लिए जल की प्रार्थना एक औषधि के रूप में करनी चाहिए।

सूक्ति :-

(अपः याचामि भेषजम्, ऋग्वेद मन्त्र 10.9.5)

मैं औषधि की तरह आपकी (जल की) याचना करता हूँ।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.6

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तविश्वानि भेषजा ।
अग्निं च विश्वशम्भुवम् ।।

(अप्सु) जलों का (मे) मेरे लिए (सोमः) शुभगुण, दिव्य ज्ञान, जड़ी-बूटियाँ आदि (अब्रवीत्) प्रकट करो (अन्तः) अन्दर (विश्वानि) सब (भेषजा) आरोग्यजनक, औषधियाँ (अग्निम्) ब्रह्माण्ड की ताप ऊर्जा (च) और (विश्व शम्भुवम्) सबका कल्याण करने वाला ।

व्याख्या :-

प्रकृति के किस तत्त्व में दिव्यताएँ, आरोग्यजनक और ताप ऊर्जाएँ इकट्ठी विद्यमान हैं? शुभ गुण, दिव्य ज्ञान और दिव्यताओं को परमात्मा ने जल में प्रकट किया है। इसमें सभी आरोग्यजनक और औषधि तत्त्व विद्यमान हैं। जल में ब्रह्माण्ड की ताप ऊर्जाएँ भी सबका कल्याण करने के लिए शामिल हैं।

जीवन में सार्थकता :-

जल किस प्रकार से एक दिव्य गुरु, एक प्राकृतिक चिकित्सक और हमारे सुखों के लिए एक विनम्र गर्मी है?

जल के तीन मुख्य लाभकारी गुण हैं :-

1. इसमें दिव्यताएँ हैं। नियमित रूप से पर्याप्त मात्रा में जल का सेवन हमारे शरीर को विजातीय तत्त्वों से रहित मन को कोमल और आध्यात्मिक रूप से प्रगतिशील बनाता है। जल का प्रयोग सभी धार्मिक क्रियाओं में किया जाता है। जल एक पूर्ण दिव्य गुरु है।
2. जल में अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए और सभी रोगों की चिकित्सा के लिए समस्त आरोग्यजनक और औषधि तत्त्व हैं। इस प्रकार जल एक प्राकृतिक चिकित्सक है।
3. जल में ताप ऊर्जाएँ भी विद्यमान हैं। जल से उत्पन्न विद्युत आज के युग में हमारे अधिकतर सुखों का आधार हैं। इस प्रकार हमारे सुविधाजनक जीवन के लिए जल एक विनम्र ताप है।

सूक्ति :-

(अप्सु मे सोमः अब्रवीत् अन्तः विश्वानि भेषजा, ऋग्वेद मन्त्र 10.9.6)

शुभ गुण, दिव्य ज्ञान और दिव्यताओं को परमात्मा ने जल में प्रकट किया है। इसमें सभी आरोग्यजनक और औषधि तत्त्व विद्यमान हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.7

आपः पृणीत भेषजं वरुथं तन्वेऽमम ।
ज्योक्च सूर्यं दृशे ।।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(आपः) जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ (पृणीत) पूर्ण करता है, सक्षम बनाता है (भेषजम्) आरोग्यजनक तथा औषधियाँ (वरुथम्) भलाई के लिए (तन्वे) शरीर की (मम्) मेरे (ज्योक) लम्बी अवधि के लिए (च) और (सूर्यम्) सूर्य को (दृशे) देखने के लिए।

व्याख्या :-

क्या जल दीर्घ आयु सुनिश्चित कर सकता है?

जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ, मेरे शरीर की भलाई के लिए आरोग्यजनक तथा औषधियों को पूर्ण बनाती हैं और सक्षम बनाती है, जिससे मैं लम्बी समय अवधि तक सूर्य के दर्शन कर सकूँ।

जीवन में सार्थकता :-

प्रकृति में जल किस प्रकार एक दिव्य तत्त्व है?

सभी जीवों और वनस्पतियों के लिए जल एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। जल के बिना कोई भी अनाज या खाद्य पदार्थ पैदा नहीं हो सकते और परिणामतः धरती पर कोई जीव अस्तित्व में नहीं रह सकता। हमारे जीवन को पोषण और स्वास्थ्य भिन्न-भिन्न उत्पादों में शामिल अनेकों विटामिन और मिनरल तत्वों से प्राप्त होते हैं। ऑक्सीजन की बहुलता के कारण जल स्वयं ही अनेकों रोगों की चिकित्सा करने में लाभकारी है। जल हमारे शरीर में आकाश तत्त्व की वृद्धि करके हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए भी लाभकारी है। अतः ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाओं के साथ जल ही एक मात्र दिव्य तत्त्व है जो हमारे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अर्थात् पूर्ण स्वास्थ्य के साथ-साथ दीर्घ आयु सुनिश्चित करता है।

सूक्ति :-

(आपः पृणीत भेषजम् वरुथम् तन्वे मम्, ऋग्वेद मन्त्र 10.9.7)

जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ, मेरे शरीर की भलाई के लिए आरोग्यजनक तथा औषधियों को पूर्ण बनाती हैं और सक्षम बनाती है।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.8

जल पर ध्यान करने का मन्त्र

इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि।

यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेष उतानृतम्॥

(इदम्) ये सब (आपः) जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ (प्र वहत) सदैव धारण करता है, ले जाता है (यत् किम्) जो कुछ भी (च) और (दुरितम्) बुराईयाँ, अपराध (मयि) मेरे में (यत्) जो कुछ (वा) या (अहम्) मैं (अभि दुद्रोह) बगावत, धोखा (यत्) जो भी (वा) या (शेषे) श्राप, कोसना (गुस्से से) (उत्) तथा (अनृतम्) झूठ बोलना या गन्दा बोलना।

व्याख्या :-

हमारी बुराईयों के सम्बन्ध में जल की क्या शक्तियाँ हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ, जल सभी हर प्रकार की बुराईयों और अपराधों के तत्त्वों को हमारे जीवन से बाहर करता है, यहाँ तक कि यदि मैं किसी के विरुद्ध बगावत करूँ या धोखा दूँ या श्राप दूँ या गुस्से के कारण कोसता रहूँ या झूठ बोलूँ या किसी भी प्रकार से गलत व्यवहार करूँ।

जीवन में सार्थकता :-

जल किस प्रकार हमारी बुराईयों और बुरी वृत्तियों को धारण करने और हमारे से दूर करने की दो विपरीत शक्तियों का प्रबन्धन करता है?

बुराईयों, दुष्टताओं और पापों की तीन श्रेणियाँ कौन सी हैं?

हमारी बुराईयों और दुष्टवृत्तियों को धारण करने की और उन्हें साफ करने की जल की क्षमता देखने में एक दूसरे के विपरीत प्रतीत होती है। किन्तु यह दोनों शक्तियाँ एक ही शक्ति के दो आयाम हैं।

हमारे शरीर में तरल ऊर्जाएँ, हमारे रक्त में पाई जाती हैं। हमारे शरीर में जल रक्त के रूप में ही होता है। हम जो कुछ भी सोचते हैं या करते हैं, हमारा रक्त उन्हें धारण कर लेता है, क्योंकि जल की स्मरण शक्ति होती है। यह स्मृति मन को पहुँच जाती है। हमारी प्रत्येक सोच हमारा कर्मकोष बन जाता है और चित्त की वृत्ति के रूप में स्थापित हो जाता है।

मन हमारे सूक्ष्म शरीर का एक भाग है जो मृत्यु के बाद भी यात्रा करता है। इस प्रकार हमारा कर्मकोष तब तक बना रहता है जब तक उसका समान और विपरीत बल प्राप्त न हो।

दूसरा, जल का सेवन हमारे शरीर और मन को विजातीय तन्तुओं से रहित कर देता है, इस प्रकार हमारे बुरे विचारों और आदतों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

बुरे विचारों और पापों के तीन प्रकार होते हैं जो जलों के द्वारा धारण किये जाते हैं और साथ ही हटा भी दिये जाते हैं।

(क) किसी भी व्यक्ति के शरीर, मन या आध्यात्मिक शक्तियों के विरुद्ध हिंसा करना।

(ख) किसी भी व्यक्ति को किसी भी कारण से दोष देना या श्राप देना।

(ग) झूठ बोलना या अभद्र बोलना।

स्वयं को इन तीन कामों से बचाओ।

ऋग्वेद मन्त्र 10.9.9

आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि।
पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा।।

(आपः) जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ (अद्य) आज ही (अन्वचारिषम्) पूर्व जन्मों के कार्य (रसेन) रसों से युक्त (तरल) (समगस्महि) प्राप्त करना (पयस्वान्) तरल के साथ शरीर (अग्ने) ऊर्जाएँ (आ गहि) हमें प्राप्त करने योग्य बनाती है (तम्) वह (मा) मुझे (सम् सृज) संयुक्त करना, जोड़ना (वर्चसा) प्रकाश के साथ।

व्याख्या :-

हमारे कर्म अगले जन्मों में किस प्रकार पहुँचते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारे सभी कर्म जलों के द्वारा, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाओं के द्वारा, अभी, आज ही ले जाये जाते हैं। इन रसों अर्थात् तरल के साथ संयुक्त, हम उसी तरल सहित शरीर प्राप्त करते हैं जो हमें ऊर्जाएँ देता है और हमें परमात्मा के प्रकाश के साथ जोड़ता है।

जीवन में सार्थकता :-

मन की वृत्तियों को अगले जन्मों तक ले जाने में जल की क्या भूमिका है?

इस पूर्ण सूक्त में हमारे विचारों, कर्मों और मन की वृत्तियों की आध्यात्मिक यात्रा का विज्ञान प्रकट होता है जो इस मन्त्र में सारांश रूप में आया है।

हमारे जल, हमारे विचारों, कर्मों और मन की वृत्तियों को धारण करते हैं। यह स्मृतियाँ सूक्ष्म शरीर का अंग बन जाती हैं जिसमें 13 भाग होते हैं – 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और अहंकार। यह सूक्ष्म शरीर पूर्व विचारों और कर्मों के अनुसार नया जन्म प्राप्त करता है जो कर्मकोष की तरह अगले जन्मों तक चलते हैं जब तक उनका समान और विपरीत फल हमें प्राप्त न हो जाये। इस प्रकार, नये शरीर में तरल ऊर्जाएँ अपनी स्मरण शक्ति के साथ पुराने विचारों और कार्यों का फल प्राप्त करने के लिए उन्हें वहन करती है।

अतः इन तरल ऊर्जाओं के माध्यम से सभी विचारों और कर्मों को आगे ले जाने के लिए चेतन रहना चाहिए और अगले जन्मों में उनका फल ग्रहण करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। इस कर्मकोष को केवल अहंकाररहित और इच्छारहित कार्यों से मिटाया जा सकता है जिनमें किसी के विरुद्ध कोई बुरी भावना न हो।

ऋग्वेद 10.82.3

यो नः पिता जनिता यो उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा।

यो देवानां नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्ति अन्या॥३॥

(यः) जो (परमात्मा) (नः) हमारा (पिता) स्वामी, रक्षक (जनिता) पैदा करने वाला (यः) जो (परमात्मा) (उत) और (बन्धुः) भाई, बांधने की शक्ति (उसके ऊपर बन्धन) (धामानि) स्थान, अवस्थाएँ, गन्तव्य (वेद) जानता है (भुवनानि) स्थानों और जीवों को (विश्वा) सब (यः) जो (देवानाम्) दिव्य का (शक्तियाँ) और लोग, ऋषि और देवता) (नामधाः) नामों को समझता है (एकः एव) केवल एक (तम्) उसको (संप्रश्नम्) उचित प्रश्न, सभी प्रश्नों, जिज्ञासाओं, खोज और ध्यान साधना का लक्ष्य (भुवना) अस्तित्वमय संसार (यन्ति) प्राप्त होते हैं (अन्या) अन्य।

नोट :- यह मन्त्र अथर्ववेद 2.1.3 तथा ऋग्वेद 10.82.3 और यजुर्वेद 17.27 में छोटे-छोटे परिवर्तनों के साथ लगभग समान है। ऋग्वेद और यजुर्वेद में – (1) 'सः' के स्थान पर 'योः' आया है। 'योः' का अर्थ है जो (परमात्मा), (2) 'नामधः' के स्थान पर 'नामधाः' आया है। (3) 'सर्व' के स्थान पर 'अन्या' आया है। 'अन्या' का अर्थ है अन्य।

व्याख्या :-

सभी दिव्यताएँ और जिज्ञासाएँ कहाँ पर एकीकृत हो जाती हैं?

जो (परमात्मा) हमें पैदा करता है, स्वामी और रक्षक है;

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जो हमारा भाई है अर्थात् बांधने की शक्ति (उसके ऊपर बन्धन);
जो सभी स्थानों, अवस्थाओं और गन्तव्यों तथा सभी जीवों को जानता है;
जो केवल एक ही है जो सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों, ऋषियों और देवताओं) के नामों को समझता है।
अन्य उचित प्रश्न, जिज्ञासाएँ, खोज और ध्यान-साधनाएँ तथा अस्तित्व वाला पूरा संसार उसी में पहुँच जाते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमारा प्रत्येक सम्बन्ध और हमारी प्रत्येक देखभाल करने वाला कौन है?
परमात्मा का महिमागान करते हुए संस्कृत में एक गान है – त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव। इसी मन्त्र के आधार पर निर्मित प्रतीत होती है।
सभी दिव्यताएँ और सभी जिज्ञासाएँ उसी का रूप ले लेती हैं। इसीलिए एक वास्तविक श्रद्धालु उसकी सर्वोच्चता और बुद्धिमता के प्रति सदैव सचेत रहता है। वह हम सब मानवों के लिए सत्य और सब कुछ है। उसकी बन्धुता और देखभाल आदि को महसूस करते हुए और विश्वास करते हुए कोई भी व्यक्ति किसी भी अवस्था के कारण कभी भी मानसिक असंतुलन महसूस नहीं करेगा।

सूक्ति :- 1. (सः वेद भुवनानि विश्वा – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) वह सभी स्थानों, अवस्थाओं और गन्तव्यों तथा सभी जीवों को जानता है;

2. (यः देवानाम् नामधः एकः एव – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) वह केवल एक ही है जो सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों, ऋषियों और देवताओं) के नामों को समझता है।

3. (तम् संप्रश्नम् भुवना यन्ति सर्वा – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) सभी उचित प्रश्न, जिज्ञासाएँ, खोज और ध्यान-साधनाएँ तथा अस्तित्व वाला पूरा संसार उसी में पहुँच जाते हैं।

ऋग्वेद 10.85.1

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः॥1॥

(सत्येन) सत्य से (उत्तमिता) धारण होती है (भूमिः) धरती, शरीर (सूर्येण) सूर्य से (उत्तमिता) धारण होती है (द्यौः) आकाशीय अन्तरिक्ष (ऋतेन) नियमितता से, अनुशासन से (आदित्याः) प्रकाश, ज्ञान की

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



किरणें (तिष्ठन्ति) स्थापित है (दिवि) प्रकाश में, दिव्यता में (सोमः) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान, चन्द्रमा (अधि श्रितः) निर्भर है।

नोट :- ऋग्वेद 10.85.1 तथ अथर्ववेद 14.1.1 समान है।

व्याख्या :-

भिन्न दिव्यताओं के क्या दिव्य आधार हैं?

(क) धरती, यह शरीर, सत्य से धारण होता है।

(ख) आकाशीय अन्तरिक्ष सूर्य से धारण होता है।

(ग) प्रकाश की किरणें तथा ज्ञान की किरणें नियमितता तथा अनुशासन से स्थापित होती हैं।

(घ) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान तथा चन्द्रमा प्रकाश तथा दिव्यता पर निर्भर करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

वह कौन सा सर्वोच्च सत्य है जो इस सृष्टि में सबका आधार है?

व्यापक स्तर पर, परमात्मा सर्वोच्च सत्य है, जिसकी सर्वोच्च दिव्यता पर भूमि तथा सभी सौर मण्डलों के सभी आकाशीय पिण्ड टिके हुए हैं। वह सर्वोच्च है और प्रत्येक अस्तित्वमय वस्तु का दिव्य आधार है। सूक्ष्म स्तर पर, हमारा शरीर भी सत्य व्यवहार से धारण होता है, अन्यथा इसमें शारीरिक और मानसिक असंतुलन पैदा होते हैं जो रोगों और अपराधों में फंस जाता है।

सभी ऊर्जाओं का प्रथम तथा अग्रणी स्रोत अर्थात् सूर्य समूचे आकाशीय अन्तरिक्ष का पोषण करता है। यह भी सर्वोच्च दिव्यता का एक अंग है। सूर्य की ऊर्जा न केवल भौतिक प्रकाश देती है अपितु हमें आध्यात्मिक प्रकाश की अनुभूति के योग्य भी बनाती है। सूर्य की किरणें नियमित और अनुशासित प्रकृति की हैं। यही एक लक्षण हमें अपने जीवन में प्रकाश और ज्ञान की किरणों का विकास करने के योग्य बना सकता है।

सभी शुभ गुण, दिव्य ज्ञान आदि प्रकाश की किरणों पर ही निर्भर करते हैं, जो हमारी, भौतिक और आध्यात्मिक, पूर्ण प्रगति का आधार बन जाते हैं। यहाँ तक कि चन्द्रमा भी सूर्य के प्रकाश से ही चमकता है। इसी प्रकार हमारे अन्दर ज्ञान का सूर्य उदय होने पर हमारा मन रूपी चन्द्रमा भी चमक उठेगा।

अतः, सर्वोच्च सत्य, परमात्मा, सभी दिव्यताओं का आधार है। हमें उस सर्वोच्च सत्य के साथ नियमित सम्पर्क बनाकर रखना चाहिए।

सूक्ति 1 :- (सत्येन उत्तमिता भूमिः — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) धरती, यह शरीर, सत्य से धारण होता है।

सूक्ति 2 :- (सूर्येण उत्तमिता द्यौः — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) आकाशीय अन्तरिक्ष सूर्य से धारण होता है।

सूक्ति 3 :- (ऋतेन आदित्याः तिष्ठन्ति — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) प्रकाश की किरणें तथा ज्ञान की किरणें नियमितता तथा अनुशासन से स्थापित होती हैं।

सूक्ति 4 :- (दिवि सोमः अधि श्रितः — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान तथा चन्द्रमा प्रकाश तथा दिव्यता पर निर्भर करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद 10.85.2

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः ॥2॥

(सोमेन) सोम के साथ अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा के साथ (आदित्या) ज्ञान की किरणें, सूर्य की किरणें (बलिनः) बलशाली हो जाती है (सोमेन) सोम के साथ अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा के साथ (पृथिवी) धरती, शरीर (मही) महान्, महत्त्वपूर्ण हो जाता है (अथ) अब (उ) और (नक्षत्राणाम्) ब्रह्माण्डीय तारें, विज्ञान की भिन्न-भिन्न उपलब्धियाँ (एषाम्) इनका (उपस्थे) निकट (सोम) शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा (आहितः) स्थापित ।

नोट :- ऋग्वेद 10.85.2 तथ अथर्ववेद 14.1.2 समान है ।

व्याख्या :-

सोम क्या है?

सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा । शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान से ही ज्ञान की किरणें बलशाली हो जाती हैं । शुभ गुणों तथा दिव्य ज्ञान से यह शरीर महान् और महत्त्वपूर्ण हो जाता है और अब, इसके बाद, विज्ञान की भिन्न-भिन्न उपलब्धियाँ शुभ गुणों के पास ही स्थापित होती हैं ।

वैज्ञानिक अर्थ – चन्द्रमा के साथ ही प्रकाश की किरणें बलशाली होती हैं । चन्द्रमा के साथ धरती महान् और महत्त्वपूर्ण हो जाती है । और फिर इसके बाद चन्द्रमा के निकट भिन्न-भिन्न आकाशीय तारे स्थापित हो जाते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

धरती के लिए सूर्य का क्या महत्त्व है?

एक पवित्र व्यक्ति और अन्य लोगों के लिए शुभ गुणों का महत्त्व क्या है?

चन्द्रमा प्रकृति से शीतल है । सूर्य की किरणें चन्द्रमा पर पड़ती हैं तो शीतल हो जाती हैं और तापमान में बदलाव के लिए धरती पर प्राप्त होती हैं । इस प्रकार चन्द्रमा ही धरती को जीने योग्य बनाता है । चन्द्रमा के निकट भिन्न-भिन्न तारें स्थापित हैं । जबकि केवल चन्द्रमा ही गतिमान तारा है । यह धरती माता के लिए प्राकृतिक उपग्रह है, जो धरती माता ने सभी जीवों का अपनी गोद में पालन-पोषण करती है ।

शुभ लक्षणों और परमात्मा के बीच यही अनुपात लागू होता है । शुभ गुण चन्द्रमा की तरह कार्य करते हैं, हमारे मन को शीतल रखते हैं, शुभ गुणों वाले पवित्र व्यक्ति पर दिव्य आशीर्वादों की वर्षा होती है जो उसे महान्, श्रेष्ठ और दिव्य बना देती है । शुभ गुण भी एक दिव्य उपग्रह की तरह कार्य करते

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हैं जो धारक के साथ-साथ उसका अनुसरण करने वाले अनेकों अन्य लोगों का भी पालन-पोषण करते हैं।

सूक्ति :- (सोमेन् आदित्या बलिनः सोमेन पृथिवी – अथर्ववेद 14.1.2, ऋग्वेद 10.85.2) सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा। शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान से ही ज्ञान की किरणें बलशाली हो जाती हैं।

ऋग्वेद 10.191.1

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर। ॥ 1 ॥

(सम् सम्) समानता, एकता, एकत्रित रहना, जोड़ा (इत्) निश्चित रूप से (युवसे) जुड़ना, परिचय करवाना, संयुक्त (वृषन्) वर्षा करने वाला (सब सुखों की) (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, प्रथम अग्रणी (विश्वानि) सब (जीव) (अर्यः) स्वामी (आ – समिध्यसे से पूर्व लगाकर) (इळः) तरंगित वाणी (पदे) शब्दों में (ओ३म्) (समिध्यसे – आ समिध्यसे) पूर्ण रूप से प्रकाशित (सः) वह (आप) (नः) हमारे लिए (वसूनि) हमारे वास के लिए सब कुछ, हमारे जीवन के लिए (आ भर) उपलब्ध करवाते हो।

व्याख्या :-

समाज में हमारे एकत्र रूप से रहने अर्थात् एकता का कारण कौन है?

परमात्मा एक तरंगित शब्द में किस प्रकार प्रकाशित हैं?

सबके स्वामी, आप हमें समान रूप से जोड़े की तरह जोड़ देते हो, परिचय करवाते हो और एकत्र करके एकता के सूत्र में बांध देते हो। आप सभी सुखों की वर्षा करते हो, सर्वोच्च ऊर्जा, आप हमारा नेतृत्व करने वाले प्रथम अग्रणी हो। आप वाणी के शब्दों अर्थात् ओ३म् में पूरी तरह से प्रकाशित हो। आप हमारे आवास के लिए और सुखी जीवन के लिए सब कुछ उपलब्ध करवाते हो।

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत और उन्हें शुभकामनाएँ किस प्रकार प्रदान करें?

प्रत्येक वस्तु को किस प्रकार प्राप्त करें और कैसे प्रयोग करें?

परमात्मा हम सबको अनेक प्रकार से जोड़ते हैं और एकता के सूत्र में बांधते हैं। निःसंदेह हमारे भाग्य और नियति के अनुसार हम एक विशेष परिवार में जन्म लेते हैं और भाईयों, बहनों और माता-पिता आदि सहित अनेक रिश्तों को प्राप्त करते हैं। घर के बाहर हम अपने मित्रों, अध्यापकों और शिष्यों, व्यापारी साथियों तथा सामाजिक और राजनीतिक प्रयासों के साथ एकीकृत होते हैं।

अन्य लोगों के साथ व्यवहार करते हुए हमें अपने जीवन में परमात्मा की भूमिका के प्रति सचेत रहना चाहिए। वह एक तरंगित शब्द – ओ३म्, के रूप में हम सबमें प्रकाशित है। अतः हमें इस बात के

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



लिए सदैव सचेत रहना चाहिए कि वह सर्वोच्च वास्तविकता प्रत्येक जीव में और समूचे वायुमण्डल में तरंगित है जो एकता की वास्तविकता की ओर संकेत करती है।
प्रत्येक वस्तु को प्राप्त करते हुए और उसका प्रयोग करते हुए भी हमें उस सर्वोच्च दाता और उसके एकता के सिद्धान्त के प्रति सचेत रहना चाहिए।

ऋग्वेद 10.191.2

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते ॥१॥

(सम्) समान रूप से, एकता के साथ (गच्छध्वम्) गतिमान (सम्) समान रूप से, एकता के साथ (वदध्वम्) बोलते हैं, सम्पर्क करते हैं, चर्चा करते हैं (विवाद नहीं करते, संघर्ष नहीं करते) (सम्) समान रूप से, एकता के साथ (वः) आपके (मनांसि) मन (जानताम्) ज्ञान प्राप्त करते हैं, विचारों को विकसित करते हैं (देवाः) दिव्य लोग (भागम्) भूमिका, हिस्सा (यथा) जैसे कि (पूर्वं) पूर्वकाल में (संजानाना) समान रूप से, एकता के साथ जानना, विचार करना (उपासते) पूजा करते थे, निकट बैठते थे, इकट्ठे काम करते थे।

नोटः— अथर्ववेद 6.64.1 तथा ऋग्वेद 10.191.2 प्रथम पंक्ति के प्रथम पद की भिन्नता के साथ शेष समान हैं।

व्याख्याः—

समाज में समानता और एकता का निर्माण कैसे किया जाये?

- ❖ आप सब समान रूप से गति करो।
- ❖ आप सब समान रूप से बोलो और परस्पर व्यवहार करो। विवाद और संघर्ष उत्पन्न न करो।
- ❖ तुम्हारे मन ज्ञान प्राप्ति के लिए समान रहें।
इस प्रकार पूर्वकाल के दिव्य लोग अपनी भूमिका का निर्वहन करते थे और हर वस्तु में सहभागिता करते थे। वे समानरूप से और एकता पूर्वक जानते हुए और सोचते हुए इकट्ठे बैठते थे, पूजा करते थे और सभी कार्य करते थे।

जीवन में सार्थकताः—

आधुनिक संविधानों के निर्माताओं की दूरदृष्टि क्या थी?

आधुनिक समाज समानता और एकता को लागू करने में असफल क्यों होते हैं?

पूर्वकाल के लोग प्राचीन ऋषि मुनि थे और सामाजिक एकता की भूमिका निभाने वाले आदर्श पुरुष थे। उन्होंने समाज में समानता और एकता का निर्माण करने में अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन किया। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने भी समानता और एकता के महत्त्व को प्रकट किया। ऐसा ही अन्य अनेकों देशों में भी किया गया। किन्तु भ्रष्ट राजनीतिक प्रक्रियाओं और यहाँ तक कि कार्यकारिणी के अधिकारी भी समाज के इस मूल चरित्र को समझने में और उसे लागू करने में असफल रहे। अब भी समानता और एकता के इन मूल सामाजिक लक्षणों को स्थापित करना और लागू करना बहुत कठिन नहीं है। वर्तमान पीढ़ी को उन सन्तों और महात्माओं के गौरवशाली इतिहास का परिचय देकर समानता और एकता के महत्त्व के प्रति चेतन और जागृत किया जा सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सबके लिए शिक्षा समान होनी चाहिए और सबके लिए कानून भी समान होना चाहिए। सबके लिए प्रगति के अवसर भी समान होने चाहिए, निःसंदेह वंचित लोगों को उनकी वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार विशेष सुविधाएँ दी जा सकती हैं।

ऋग्वेद 10.191.3

समानो मन्त्राः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥ ३॥

(समानः) सबके लिए एक और समान (मन्त्रः) मार्गदर्शन देने के नियम, निर्देश, सुझाव (समितिः) सभा, संगठन (समानः) सबके लिए एक और समान (समानम्) एक और समान बनो (मनः) मन (सह) एक साथ (चित्तम्) बुद्धि (एषाम्) इन सब लोगों के (समानम्) एक और समान बनो (मन्त्रम्) मार्गदर्शन देने के नियम, निर्देश, सुझाव (अभि मन्त्रये) स्थापित (वः) आपके लिए (समानेन) समानता और एकता के साथ (वः) आपके लिए (हविषा) आहुतियाँ (जुहोमि) जोड़ता हूँ।

नोटः— यह मन्त्र अथर्ववेद 6.64.2 और ऋग्वेद 10.191.3 में कुछ परिवर्तनों के साथ समान है।

व्याख्याः—

समानता पर वैदिक निर्देश क्या है?

- सबके लिए मार्गदर्शन देने वाले नियम, निर्देश और सुझाव एक और समान हों।
- सबके लिए सभाएँ और संगठन एक और समान हों।
- सबके मन और बुद्धियाँ एक और समान हों तथा एकत्रित होकर रहें।

मैं तुम सबके लिए एक समान विचारों, नियमों और निर्देशों को स्थापित करता हूँ। मैं सबके कल्याण के लिए तुम्हें समान आहुतियों से संयुक्त करता हूँ।

जीवन में सार्थकताः—

आधुनिक सरकारें समानता को अक्षरशः और आत्मिक रूप से लागू करने में असफल क्यों होती हैं? प्रत्येक माता-पिता, वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों, नेताओं और प्रत्येक सरकार का यह दायित्व होता है कि अपने अधीनस्थ सभी नागरिकों के लिए एक समान नियमों को लागू करें।

समानता से समानता पैदा होती है, जबकि असमानता से भिन्न-भिन्न माने जाने वाले वर्गों के बीच सौहार्द समाप्त होता है। एक राष्ट्र के लोगों को एक समान कानूनों से मार्ग दर्शित किया जाना चाहिए और इन कानूनों को बिना किसी भेदभाव के लागू किया जाना चाहिए। समूचे विश्व में अधिकतर संविधान और कानून वर्गों, जातियों, रंग, नश्ल और लिंग आदि के आधार पर असमानता को रोकने की गारंटी देते हैं। अदालतें भी समानता को मूल संवैधानिक निर्देश के रूप में घोषित करती हैं।

वास्तव में यह एक वैदिक निर्देश भी है। परमात्मा की दृष्टि में, चींटी से लेकर हाथी तक, सभी समान हैं। सभी जीवों को जीवन की मूल शक्ति के रूप में एक समान शक्ति प्रदान की जाती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद 10.191.4

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ 4 ॥

(समानी) समान हों (वः) आपकी (आकूतिः) चर्चाएँ, संकल्प (समाना) समान हों (हृदयानि) हृदय (वः) आपके (समानम्) समान (अस्तु) हों (वः) आपके (मनः) मन (यथा) जिससे (वः) आपके (सु सह असति) एक समान जीवन का आनन्द ले सको (समान शांति के साथ और इकट्ठे प्रगति करते हुए) ।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 6.64.3 तथा ऋग्वेद 10.191.4 में समान रूप से आया है ।

व्याख्या:-

हम सब समान जीवन का आनन्द कैसे ले सकते हैं?

- अपनी चर्चाएँ और संकल्प समान होने दो ।
 - अपने हृदयों, भावों और संवेदनाओं को समान बनाओ ।
 - अपने मन और इच्छा शक्तियों को भी समान बनाओ ।
- जिससे आप एक समान जीवन का आनन्द ले सको ।

जीवन में सार्थकता:-

आज के युग में एक आध्यात्मिक समाज किस प्रकार सुनिश्चित किया जा सकता है?

यह मन्त्र सुसहासति पर जोर देता है अर्थात् समान शांति और सबके लिए समान प्रगति सुनिश्चित कराते हुए एक समान जीवन । भारत के प्रधानमंत्री रहते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी शासन पद्धति का एक प्रसिद्ध नारा व्यक्त किया – ‘सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास ।’

केवल यही समान जीवन, समान शांति, समान प्रयास और प्रगति का समान हिस्सा किसी समाज और राष्ट्र को तेज गति से पूर्ण विकास की ओर ले जा सकता है । शांति को सामान्यतः एक आध्यात्मिक फल माना जाता है । सरकारें और समाज सबके लिए समानता और एकता को लागू करके निश्चित रूप से सबके लिए बाहरी शांति सुनिश्चित कर सकती हैं । यदि सरकारी कानून अलग-अलग वर्गों के लिए अलग-अलग होंगे तो इससे कुछ लोगों को सम्मान महसूस होता है और कुछ लोगों में असंतोष उत्पन्न होता है । अतः प्रत्येक सरकार और समाज का यह दायित्व है कि वह सब लोगों को एक समान आदर और श्रद्धा के साथ मार्गदर्शन दें और नियंत्रण करें । केवल एक आध्यात्मिक समाज ही एक समान जीवन पद्धति का स्थान बन सकता है । जिसमें सबके लिए समान शांति और समान प्रगति के अवसर प्राप्त हों । सबके लिए शिक्षा, कानून और अवसर समान होने चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति सरकार के नियंत्रण और निर्देशन में रहें । यदि कानून सबके लिए समान हैं तो कोई भी कानून से ऊपर नहीं होता ।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171